मां के पेट में होगी बच्चे की सर्जरी

रेणु भट्टाचार्य

किसी औरत के लिए मां बनना एक उपलब्धि मानी जाती है। लेकिन अगर बच्चा बीमार पैदा हो, तो यह उसके लिए सबसे बड़ी त्रासदी भी साबित हो सकती है। मेडिकल साइंस उस जगह पहुंच गया है, जहां बच्चे के जन्म से पहले ही उसकी सर्जरी हो सकती है।

यूक्रेन के डॉक्टर विक्टर ओशोविस्की इस बेहद जटिल प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं। उनका कहना है कि अगर गर्भ में पल रहे बच्चे को कोई बीमारी हो, तो इसके लिए मां की सर्जरी करने की ज़रूरत नहीं है, सीधे बच्चे की सर्जरी की जा सकती है।

यूक्रेन में पढ़ाई करने के बाद जर्मनी के माइंस यूनिवर्सिटी में रिसर्च कर रहे डॉक्टर ओशोविस्की ने *साइंस* पत्रिका में जानकारी दी कि जानवरों, खास तौर पर भेड़ों पर इसका सफल परीक्षण किया जा चुका है। उनका कहना है कि गर्भ के अंदर अगर जुड़वां बच्चे हैं और दोनों एक-दूसरे से जुड़े हैं, तो दोनों के बचने की गुंजाइश बहुत कम होती है। डॉक्टर ओशोविस्की का कहना है, पैदा होने तक ऐसे 80 फीसदी मामलों में बच्चों की जान चली जाती है क्योंकि उनका रक्त प्रवाह कुछ अजीब होता है। लेकिन अब गर्भ के अंदर ही सर्जरी के ज़रिए उन्हें अलग-अलग करके दोनों की जान बचाई जा सकती है।

मेडिकल साइंस की यह कामयाबी गर्भ के अंदर बीमार पड़ने वाले करोड़ों बच्चों को बचा सकती है। दुनिया भर में हर साल ढाई लाख से ज़्यादा बच्चे बीमारी की वजह से मृत पैदा होते हैं। भारत में प्रति एक लाख में पांच बच्चे इसके शिकार होते हैं। बीमारी के साथ पैदा होने वाले बच्चों की संख्या तो इससे कई गुना ज़्यादा है। अमेरिका में पहले भी अजन्मे बच्चों की सर्जरी की जा चुकी है। मशहूर डॉक्टर माइकल हैरिसन ने ऐसी सर्जरी की है, जिसमें पहले मां के पेट में चीरा लगाया जाता है, फिर गर्भाशय में सर्जरी की जाती है। लेकिन युरोप सहित दुनिया के कई हिस्सों में इसे स्वीकार नहीं किया गया है। डॉक्टर ओशोविस्की का कहना है कि युरोप में जर्मनी में इस रिसर्च की सबसे बेहतर संभावना है।

गर्भ के अंदर सर्जरी बेहद जटिल प्रक्रिया है। डॉक्टरों को विशेष उपकरणों को गर्भाशय में उस जगह पहुंचाना होता है, जहां एक झिल्ली के अंदर बच्चा सुरक्षित रूप से विकास कर रहा होता है। इस झिल्ली में द्रव भी होता है। उस द्रव तक उपकरण पहुंचने के बाद ही बच्चे का ऑपरेशन संभव है। मामूली-सी चूक से झिल्ली नष्ट हो सकती है, जिसके साथ बच्चा भी खत्म हो सकता है। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या एक बीमार बच्चे को जीवित पैदा करना बेहतर है, या उसकी बीमारी ठीक करते हुए उसे गंवा देना।

डॉक्टर ओशोविस्की *एम्नियोटिक सैक* (गर्भाशय में बच्चे को सुरक्षित रखने वाली झिल्ली) की जटिलता समझाते हैं। कुछ जानवर इस झिल्ली को दोबारा पैदा करने में सक्षम होते हैं, लेकिन मनुष्यों में ऐसा नहीं होता। अगर सर्जरी के दौरान चूक से यह झिल्ली फट जाए, तो मां की जान का खतरा होता है। उनका कहना है, यह कोई आसान काम नहीं है। गर्भाशय में एक महीन छेद बनाना होता है, लेकिन इतने छोटे छेद से आप सब कुछ नहीं देख सकते। अगर छेद बड़ा होगा, तो आसानी होगी लेकिन उसमें जोखिम बढ़ जाता है। हम बीच का रास्ता तलाश रहे हैं।

डॉक्टरों को इस सर्जरी से आपस में जुड़े जुड़वां बच्चों की सर्जरी के मामले में सबसे ज़्यादा उम्मीद है। दूसरा हर्निया की सर्जरी है। इसके अलावा अजन्मे बच्चे के फेफड़ों की सर्जरी भी गर्भ के अंदर की जा सकती है। दिल का भी

ऑपरेशन संभव है। कई बार बच्चे के दिल में खून का सही प्रवाह नहीं होता और कभी-कभी उसके हृदय में मामूली-सा छेद होता है। यह सर्जरी गर्भ में ही की जा सकती है।

गर्भ के अंदर भ्रूण में कभी-कभी ट्यूमर विकसित हो जाता है। कई बार ट्यूमर का आकार बड़ा हो जाता है और जिससे अजन्मे बच्चे को काफी नुकसान पहुंच सकता है। यहां तक कि ट्यूमर में भ्रूण से अधिक रक्त जमा हो जाता है। ऐसे मामलों में सर्जरी कर ट्यूमर को रक्त सप्लाई करने वाली धमनियों से रक्त प्रवाह रोका जा सकता है।

कुछ मामलों में भ्रूण की रीढ़ झिल्ली और द्रव से नहीं ढंकी होती है। इसकी वजह से बच्चे में विकार पैदा होता है और वह त्वचा की बीमारी के साथ पैदा होता है। उनके जननांग ठीक से काम नहीं करते और उन्हें चलने फिरने में भी मुश्किल होती है। डॉक्टर ओशोविस्की इस पर भी काम कर रहे हैं।

बच्चा लगभग नौ महीने तक मां के पेट में रहता है। डॉक्टरों का कहना है कि पहले के तीन महीने बेहद महत्वपूर्ण होते हैं और इस दौरान मां को सबसे ज़्यादा एहतियात रखने की ज़रूरत है। इसी दौरान उन्हें बीमारी का भी खतरा रहता है। डॉक्टरों का कहना है कि बीमारी का पता लगने के बाद जितना जल्दी हो सके इसकी सर्जरी की जानी चाहिए। इससे सर्जरी का बेहतर नतीजा निकलता है।

भ्रूण की सर्जरी और इसकी नैतिकता का सवाल उठना लाज़मी है। एक बड़ा खेमा इस सर्जरी के खिलाफ है। उनका कहना है कि गर्भ के दौरान मां के पेट के अंदर किसी भी तरह की सर्जरी करना अनैतिक है और इस दौरान यदि मां या बच्चे को कुछ हो जाता है, तो इसकी भरपाई कोई नहीं कर सकता, लेकिन दूसरे खेमे का मानना है कि अगर गर्भ में पल रहा बच्चा खुद एक जान है, तो उस जान को भी सेहतमंद होने का अधिकार है और ऐसे में सर्जरी की जानी चाहिए। युरोप में ऐसी सर्जरी से पहले एक नैतिकता कमेटी से मंज़ूरी लेनी पड़ती है। ***(स्रोत फीचर्स)***